

Chapter 9: Aatmatran - Rabindranath Tagore

आत्मत्राण - रवीन्द्रनाथ टैगोर

1. Poet Introduction: Rabindranath Tagore

- जन्म: 7 मई 1861, कलकत्ता (कोलकाता)
- पूरा नाम: रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगोर अंग्रेजी उच्चारण)
- उपाधि: "गुरुदेव", "वशिकवा", "कवगुरु"
- नोबेल पुरस्कार: 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार (पहले भारतीय)
- पुरस्कार कृति: "गीतांजलि" (अंग्रेजी अनुवाद के लिए)
- शिक्षा: घर पर ही संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला की शिक्षा
- शांतिनिकेतन: 1901 में शांतिनिकेतन की स्थापना
- बहुमुखी प्रतिभा: कवि, लेखक, नाटककार, चित्रकार, संगीतकार
- राष्ट्रगान: भारत का राष्ट्रगान "जन गण मन" टैगोर की रचना
- बांग्लादेश का राष्ट्रगान: "आमार सोनार बांग्ला" भी टैगोर की रचना
- प्रमुख रचनाएं: गीतांजलि, गोरा, घरे बाइरे, डाकघर, चोखेर बाली
- मृत्यु: 7 अगस्त 1941, कोलकाता

2. Poem Context and Philosophy

- शीर्षक का अर्थ: "आत्मत्राण" = आत्मा की रक्षा, आत्म-सुरक्षा
- मूल रचना: बांग्ला में लिखी गई, हिंदी अनुवाद
- केंद्रीय भाव: ईश्वर से प्रार्थना - मुझे कायर मत बनाओ
- जीवन दर्शन: कठिनाइयों से भागना नहीं, उनका सामना करना
- आध्यात्मिकता: ईश्वर पर विश्वास लेकिन कर्म पर जोर
- साहस की प्रार्थना: दुख से बचाओ नहीं, दुख सहने की शक्ति दो
- आत्मनिर्भरता: दूसरों पर निर्भर न होकर आत्मविश्वासी बनना
- मानवीय गरमा: हर परिस्थिति में मनुष्यता बनाए रखना

3. Detailed Poem Analysis

मुख्य पंक्तियां और गहन व्याख्या:

"वपिदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं"

- भावार्थ: मैं यह नहीं चाहता कि मुझे मुसीबतों से बचा लो
- संदेश: कठिनाइयां जीवन का हिस्सा हैं, उनसे भागना नहीं चाहिए
- साहस: वपित्तियों का सामना करने की हिम्मत चाहिए

"केवल इतना हो (करुणामय) कभी मैं न होऊँ वचिल"

- भावार्थ: बस इतना करो कि मैं कभी हिम्मत न हारूँ, वचिलति न होऊँ
- प्रार्थना: मानसिक शक्ति और धैर्य की मांग
- दृढ़ता: हर परिस्थिति में स्थिर रहने का वरदान

"दुख-ताप से व्याकुल चित्त को न तुम दो सांत्वना नहीं"

- भावार्थ: दुख में मुझे सांत्वना मत दो
- अर्थ: दुख को स्वीकारने और सहने की शक्ति चाहिए
- मनोबल: कठिनाइयों से लड़ने का साहस

"केवल इतना हो (करुणामय) दुख-भार को मैं कर सकूँ संवहन"

- भावार्थ: बस इतना करो कि मैं दुख के भार को सह सकूँ
- संदेश: समस्याओं से भागना नहीं, उनका सामना करना
- आत्मशक्ति: स्वयं की शक्ति पर विश्वास

"नत शरि होकर सुख के दनि में तव मुख पहचानूँ छनि-छनि"

- भावार्थ: सुख के दनि में वनिम्रता से तुम्हें याद रखूँ
- सीख: सुख में ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए
- कृतज्ञता: अच्छे समय में भी ईश्वर के प्रति आभार

"दुख के रात्रि में भी तुझ से मुख न मोड़ सकूँ कभी"

- भावार्थ: दुख में भी तुम्हारे से मुँह न मोड़ूँ, तुम पर विश्वास बनाए रखूँ
- विश्वास: कठिन समय में भी ईश्वर पर भरोसा
- धैर्य: हर हाल में ईश्वर से जुड़े रहना

4. Central Themes and Messages

- साहस और धैर्य: कठिनाइयों का सामना करने की हिम्मत
- आत्मनिर्भरता: स्वयं की शक्ति पर विश्वास
- कर्मयोग: भाग्य पर नहीं, कर्म पर विश्वास
- ईश्वर में आस्था: ईश्वर पर विश्वास लेकिन आलस्य नहीं
- संघर्ष का महत्व: जीवन में संघर्ष जरूरी है, वह मनुष्य को मजबूत बनाता है
- वनिम्रता: सुख में अहंकार नहीं, वनिम्र रहना

- दृढ़ विश्वास: दुख में भी ईश्वर पर विश्वास न डगि
- मानवीय गरमि: हर हाल में अपनी मर्यादा बनाए रखना
- आत्म-विकास: कठनाइयों से ही व्यक्तित्व का विकास होता है

5. Literary Devices and Style

- भाषा: सरल हर्दी, भावपूरण और प्रवाहमान
- शैली: प्रार्थना शैली, भक्ति भाव, वनिम्र नविदन
- छंद: मुक्त छंद, स्वच्छंद शैली
- स्वर: वनिम्र, आत्मविश्वासी, दृढ़
- अलंकार:
 - पुनरुक्ति: "केवल इतना हो"
 - वरिधाभास: सुख में भी याद, दुख में भी याद
 - प्रतीक: दुख-रात्रि = कठनि समय, सुख के दनि = अच्छा समय
 - भावपक्ष: गहन भक्ति भाव, आत्मविश्वास, साहस
 - शब्द चयन: सरल लेकनि प्रभावशाली

6. Important Questions

प्रश्न 1: कवि ईश्वर से क्या प्रार्थना नहीं कर रहा है?

उत्तर: कवि ईश्वर से यह प्रार्थना नहीं कर रहा कि मुझे वपिदाओं से बचा लो, दुख में सांतवना दो, या कठनाइयों से मुक्ति दिलाओ । वह कायरता की प्रार्थना नहीं कर रहा ।

प्रश्न 2: कवि ईश्वर से क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर: कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मुझे वपित्तियों में वचिलति न होने दो, दुख का भार सहने की शक्ति दो, सुख में वनिम्र रहूं और दुख में तुम से मुंह न मोड़ूं । मुझे साहसी और धैर्यवान बना दो ।

प्रश्न 3: "दुख-भार को मैं कर सकूं संवहन" - इस पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: कवि कहता है कि ईश्वर मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं दुख के भार को उठा सकूं, सह सकूं । मैं दुख से भागना नहीं चाहता, बल्कि उसका सामना करने की हम्मित चाहता हूं ।

प्रश्न 4: कविता का केंद्रीय संदेश क्या है?

उत्तर: कविता का केंद्रीय संदेश है कि जीवन की कठनाइयों से भागना नहीं चाहिए, बल्कि उनका साहस के साथ सामना करना चाहिए । ईश्वर से कठनाइयों से मुक्ति नहीं, बल्कि उन्हें सहने की शक्ति मांगनी चाहिए ।

प्रश्न 5: कवि सुख के दनि में क्या करना चाहता है?

उत्तर: कवि सुख के दनि में वनिम्रता के साथ ईश्वर को याद रखना चाहता है । वह नहीं चाहता कि सुख में अहंकार आ जाए और ईश्वर को भूल जाए । हर पल ईश्वर के प्रतिकृतज्ञ रहना चाहता है ।